मराणकानमे पूरानम् ॥ मश्यमाः मिश्या प्राम्भे अस्ति। भिवलिए व्रिध्य प्रभाषा प्रमानः स्किष्मित्रमः अन्ति। अन्ति क्नुमु: भन्द्रमीक में विद्याभिइह्या भन्दः भगी म भधने गमे विवाह वृह अस्ति इः इ भगभिष्टियुने प्रदेशका भुर्भम्क विभिष्ट्रमण भूभिण नननुना १५ यं बरः इ भ्रियुवानः भ्रीवन्मे विग्दा नमाण्ण प्रानिक विद्धा निक्रि भर्नः मेवक भियः अ भन्धानी लगान्यः प्रनिकी भ्रायलाठः भनाभी हन्त्रम्यः भन्नेक भाषामुद्रः ।।। शिक्त् मंत्रे । अविकास ॥ ५३: अविभागं भद्भ ० वं गमयन्य ०० एपन्य भीद्वात्व श्रयं क्रिक्टिंग्न श्रम्मन्य वर्ग १ नक्लेय ०१नीनय ३ मर्भर्नाय ०३ श्भिष्य क्रियश्चित्र गद्गमः॥ म्मक्षण्य ०९ कर्नाक्षेय विश्व अस्तु विधुः चित्रभित्रः नप्त्य न्यिकिशण्य याउदः यद्गुलच्याः १ मध्यवणन्य इ इनेभउये D8337 ०. इ.स्थेड

व्याभनवभी इउभित्रा। गरेमाभिनवक्षेत्र सन्तर्भे राष्ट्रकः अस्तर भीइररद्रक्र मंग्रेकी व क्वलभी अभितिने उक्त क्षेत्र भी भी के भी भी के कि ज्यमेर्भक्षानेद्वाराज्ञ ॥ उद्गलेभ्यक्षेष्ठ मीरण्यस्त्रीन्ड ४एम सीरभनेवभीकिन भेडि विभक्षीः विभक्षान्त्रको के विभक्षिया विभागारि॥ यसग्भन्नर्थं उद्देश में कि कि अहणीः निक्त्यि क्रिंम इस्थार्थ कर् भर्गा॥ ग्रामिनव्या अर्थिका अन्य अर्थे योगभाष्ठि विः भवक्ष्ममा। गरेश मुनानवभी अनवश्रवुग्यि भग्मभएक युग्न भक्र भूष्ट जला हेराडी।नवभीग्राष्ट्रभी विक्र इन्छ विस्रुथम्यूलं: व्येधलंनुवर्धाः अस्ति अपर लाभी ॥ सीराभन्यभी भेजा अवक िएक किक अभिनित्र सक्ष अक्ष राम के मिल् कारिय : यहिकि दि र्योक्षे उद्युक्त यक्ष क्षेत्र विश्व कार्लि भर निर्देश के उद्याल भी अभिमात्रिते के उद्येशकारी प्रेमिशिका रामाण्य थारे इक्त रूपा र्म्स्रभणन्म द्रि॥ घेउमेक्स्रियमोस्र द्रम्स्रभणन्म ॥

2040

विभयाउभभमाउभाभिमाउनवधुमिष्ठगाउभाउभमा कक्षाममुकार मम्भाप रणने श्रम्भने थ्रान्त्री सनिविष्य मेर्से लग्ममास्।। गर्भलकाण्यच्याभिति॥ ९िड्रिंड्ग्ड्गा मन्हरिस्टिन उउः भन्म भेजेन्द्राभः॥ उँयंभगालिक्द्राभः॥ विर्माभाष्यनभूः।। विरं नभूः इत्यान् । यविर मभः इत्यान् ।।विभा नुभः कृपये। वियनभः निक्तिनेभः प्रक्ति। विभेशनभः थर्पये।। विम्रवणचरी॥ गमम्मूरच्वि गमठइ चणि उत्रेगभः भूम्याचार्री।॥ मुष्य न्भा। कला कियाक विकाल भनिमंतीर अनुष्टा भिडं भक्ष प्रानभंगी मण नमधारत्यास्यां राज्यान् भीडां भाक्ता भागित करो विक्र विकेशमा वंश्या अका एक मार्थि विविण केले साला संकृता।। नील रूल मल्डिंग्सरण एमज एभी पुने उसी मिलिल मा लाए रेड्न

कर्छिनिधिनभी।क्रमग्रम्म्याम्यानिश्विष्ठिधानभस्मीभी भीउँमाध्क

गिग्दी में उत्या विद्विधानी, विद्यारा मार्थ में विद्या में प्राप्त में विद्या एउत्राल एक कर्मित्र क्रान्य के निम्म के इभिराद्रणः मर्भिरु असू भाक्तियां चर्किल सिरः भगीवस्पिरी ल्युवा द्रा भेउर्भ्य में हेनीन भी के किन क्रिक भेडरिंग्या भ लभी ॥ सनक्ष्यभेषके धक्का कर्म विद्धिका अन्तिक भने गमभीरके मिनमंडर गामिल्स्टर्या ष्टायेत्रीलक्षामग्भग्गीचलियनभी रणनकीलकालथेउँकाष्ट्रभन ध्यार्डम्। भाभाइल्ण्वा । प्रस्ति । प्रस्ति ।। प्रस्ति ।। माम्मेन भे अविवीधारियद्वा हड्डा थक्ट भया मंड्रेग जिला भ लाडि भिर्या दिश्मिक्मी॥ मेयानंगिकिएडांचे हिंद्नं निणन्यम क्रिल्ला गृह अक्टराभमन्न भियु अभिक्ष अध्यान विषय क्रिल्ला हु अध्यान विषय क्रिल्ला हु अध्यान हु अध्यान हु अध्यान हु अध्यान क्रिल्ला हु अध्यान हु अध्य

20010

उद्यासक्यान्त्र ॥ दुर्ह्यम् ॥ थम्मा गोल्भन्द भक्त द्वा विक्षित्रम् गण्डइनम् सुक्रेक् नम्मान अनिपद्मार्थिरेगेरेगिकमारभ्यनायक ठक्राडिकाभच्छानीचमाथ रिअसिएर ॥ ५६अन्मे॥ गर्नेगीकणकगवित्रहमस्मानमित्रभी क्रणक्रक्रोस् स्वन क्षां धर्यनभः॥ ४८गतः॥ समहानिम भक्तालागिक लाविषिणानिय गामसमूनम् सङ्स्रा मिन्सिम्हा । उरस्यम् ॥ विभिर्यनभर्षेषुभवकाभर्याठ्य सर्वमीप्र

छन्भाग्भय॥ स्थिन्वर्वग्य॥ छिठगवस्कलाविमः स्रम्भूगिरगर्भया प्रमनिष्ठितिम् सुरिम्युं लियिसिर्वे ग्लामी में अपूर्वा महित्र प्रभवेश थिनक्षिंअयाउनायक्षयाध्ययाक्षंभ्राल्यक्षान्ययेभरिम्हिनिषु केंद्रनम्मिति नमुक्त्रभेष्ठानेयानेत्रान्ते प्रेमियान्य ॥ मिया विकास मानुष्य सञ्चित्रवाम भरायाधिनमाउँ का दिश्याधिमा विल्ला एन सम्प्रियाकि भुद्धलेन एने नवां भगि क्रिउण्यमण्डर वद्यां चित्रचेमा। इन्ह जियद्विते विकास वणन्य एग्य लिप्यु विन्मित्र विग्म भन् विमेधाः ॥ लिपिक्र एग्रिय ग्रभच्छिद्यभाविडः गानग्रेडिरामिडिश्चरेशनव्छा मुव्याः भंभक् मिर्भण्या कि विषि विन्यानि मिर्भिया निर्मा के विषे । कार्यनि लक्ष्मणक्षेत्राहुन्त्र भाष्ट्रा भाष्ट्र किर्देलप्र प्रकृति गिर्यं ज्रदं मा विद्विष्ठिकार्या भएकि है केना भारत प्राप्टिकि है मिडी। रे क्रिन्भेवडः भेभाक्ष्मिक्षित्राच्येभः। किं क्रिमें किरामस्विक्षि इड्रोमिविस्र है। एक अपने कि भड़ा ए यो निस्द्र मिया लीव कीने येष केल यवाकाभ्रभविगमाः। अग्झाल्कीनिकावाभन्नः भक्तीरियः सन्ताम

महण्यस्यिक्यन् अचक् ॥ गल्यम् म्राच्या अल् विद्राति विद्रयं मुल अगगः भेषाः दानिस्तियाम् तिः ॥ ग्रेष्म किन्ने क्नले भनेक सम् अल्लायभारिक राइन्स्इयेडमराध्यमा विभाग्यमायुक्त लेका भीउया भारा में अलाने देहरानी पेन्स इभनु होणीः॥ अलाव अन्य श्री प्रमे भमिथियां प्रजिभाग्य प्रमादनग्री राभिय। यह कोग्गर्य द्राप्य चेस्री गर्भने भक्भ विकिप्येष्ठ्रहें भर्भवक्रद्ध भिद्वय । विनेधक्र क्रिंड इभवेनिष्ट्र लंड वला पन्यत्वरेश में विक्रवला १०० । १०० । १०० में विक्रयल के भारतिके वियाः उस्मिष्ठ क्वसिर्ः भचक्मिक्न प्रमः १९०॥ भक्तिके भूते मरमक्सभएगम इहिक्याधिभद्दिष्य भक्षभगीठयेष्य। भवेष्य र्शितम् र्योगयं भूक्ष्रभः ॥ मण्डियद्वे उद्गर्भ ने न्इभि हिभवान्यार्थे ११ भवेभव्याभेष्ठ्य संभिक्त रेण्य द्वां। प्रमेरक्नसं भिष्ट क्यालेष्ट इमीपाणा । पर्मान्य प्रज्ञापनीकामार्पिय मस् मामेपायभन राष्ट्रयम् अन्ता १मा भयमण्या ज्यार्का रिम्तान्य । क्रे हर्राने मेरे भव्य किया केयानम् ॥ थिर्पूणे यम अलेन यह नर्डि विन

वन्भ॰

क्रियेंग्रे॥ थक्क्ष्युर्गिभ्रेलिक्ष्यन् स्र ग्रह्मान्यान्य । स्युरंगिलापे द्वेत्रे निग इन्स्यारित भक्षभाषि अलाइ का हिगार्सनेन रिपिसा मिर्ग हुड़ रागितिस्थामधार्थ एरवन्य मिनेलिझ्छ पूर्भ देशायनाः लिपितयुर्भ कानुभक्तिणानुक्रनीथ क्रायाभागन क्षेत्रीन्मयह्वउद्गण्ड ॥मुह भनेभभाक्षायभाग्ययभन्त्रणः पर्ण्याम्भूभप्रमुशिक्षिविकित्रित्यः॥ लिश्निविष्णलिस्तुने अइछिठविष्ठ्यभी भ्रिक्मीलापेलुक्मेभागक् विचिश्चकर्ग ॥व्छाउँ भक्तिभद्रभू भद्रिनेगडभक्त मुख्येभगल्यू के अभिकाम अञ्चल ॥ विज्ञ ध्या कि विज्ञ के ध्रमा उर्ग एक्टर लक्ष्मक्ष्याम्बद्धार्या ॥ जिल्द्वारक्षमा अति स्मान हमित लक्ष मक्षिलकाय लिपिट्टर्ड भिक्ष । भक्ष रचीर सार भिक्क भागमारि वसारे इसा भाग के मार्ग के भेठिका पानवार परा अस्ति । सामानवश्रीके ध सक्छिमी भर्गा कि स्वित्र भेडिका परा करामा । अर्थे भेडिका परा । अर्थे । अर्थे भेडिका परा । अर्थे । अर

क्रायन किने निक्षा मुपभी एखें नार लाए अलापे महे पर करें है या। अक्ष्मुक्लेक्रियाना लाउना प्रिका अक्ष्मी विद्याया गर्मा १क्रिक्राधिय। मानिक्थि शिक्राव अग्रक्षा पित्राव भविथम्भन्तीवक उद्भारिमभ्रमा १एप्रिया मिर्ग्ड्स म्हली स्मिन्ति । स्मिर्गि १५० राधिसुंह क्याि भिक्रिया। मुस्रियमभेचेध्रमभुभे मुहले कर विद्वा र्राक्षेत्रधार्याम्मार्थाक्ष्रकार्थे काल्मार्थंभभाषायाभ्यम् नि विनी।भिष्टिक्मण्भिचरवेपननिलायिहिय।भिवन्स्रिधिउन्दूरिवि नन्मज्भानिप्डि अन्हन्मिनिमाधेका विक्रधमिविधमक्रमी म्यानिमारीविभाग्याप्रणिल्य राष्ट्रा भूति मन्त्रन् भूत्रक्त भिउन्ने ॥ प्रीर्म मिराभ्य उद्देशन रेळ्य कुर्ग निपनीय निपन भच्छेयक्क उवद्वर ॥ मण्॥ दुरिष्ट्यामनि उर्देनियी र्मु वेभवाम राभनाभीनापन विकिश्याला।।



